बालशिक्षा ॥

पहिला हिस्सा

सरल और मनोरञ्जन कहानियों का संग्रह

जिसको

श्रीमद्विद्यासम्पन्न श्री ५ श्रीयुत जान सी नेस्फ़ील्ड साहब
बहादुर अवधदेशीय पाठशालाओं के मुख्य इन्स्पेक्टर
की आज्ञानुसार मुंशी अम्बिकाप्रसाद साहब ज़िलअ
लखनऊ के डिपुटी इन्स्पेक्टर ने

हिन्दी शिक्षावली को प्रचलित हिन्दोस्तानी
भाषा में शोधकर लिखा

अवधदेश के निजप्रबन्ध पाठशालाओं के लिये

—:o:—

इकतालीसवीं बार

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में छपकर प्रकाशित.

सन् १९१९ ई०

कापीराइट महफ़ूज़ है बहक़ सर्रिश्तै तालीम अवध

भूमिका।

आज कल बड़े बड़े बुद्धिमान् और विद्वान् लोगों की यह सम्मति है कि सब प्रकार की पुस्तकें–विशेषकरके सरिश्ते तालीम की पुस्तकें–ऐसी भाषा में लिखी जायँ जिसको हिन्दोस्तानी कहते हैं, अर्थात् उर्दू वा हिन्दी अक्षरों में जहाँ तक हो सके एक ही शब्द लिखे जायँ। वे शब्द चाहे संस्कृत वा हिन्दी के हों चाहे अरबी फ़ारसी के, परन्तु ऐसे हों जो बहुधा बोलचाल में आते हों और जिनको प्रायः सब लोग समझ सकते हों। इसका विचार न रक्खा जाय कि हिन्दी लिखावट में फ़ारसी वा अरबी के शब्द न आवें और उर्दू लिखावट में हिन्दी वा संस्कृत के, जिस विद्वान् की आज्ञानुसार यह पुस्तक शोधी गई उसकी भी ऐसी ही अनुमति है, इसी से जान बूझकर इस पुस्तक में फ़ारसी और व्रजभाषा वा अरबी और संस्कृत के शब्द मिलाकर लिखे गये हैं जिसमें किसी को इसके अर्थ समझने में विशेष कठिनता न पड़े।

मुझे कुछ दे। उसने बहुतसी गालियाँ दीं। वह फ़क़ीर बोला–"अच्छा बाबा, जैसा दोगे वैसा पाओगे।"

चौदहवाँ पाठ।

लोहे का बयान।

लोहे से अधिक फ़ायदेवाली धातु दुनिया में नहीं है। जो विचार करके देखो तो कोई काम ऐसा नहीं कि बिना लोहे की मदद के हो सके। दुनिया में धन और सब चीज़ों की शोभा लोहे के सबब से है। जिस मुल्क के लोग लोहे को नहीं जानते वे बहुत ग़रीब होते हैं–न खेती कर सकते हैं, न कपड़ा वग़ैरह बना सकते हैं। लोहा खानि से निकलता है और उसमें मिट्टी और पत्थर मिला रहता है। ऐसा लोहा यदि यहाँ के आदमी देखें तो न पहिंचान सकें कि यह लोहा है या पत्थर। परन्तु जब उसको तेज़ आँचसे गलाते हैं तो लोहा साफ़ अलग हो जाता है। हिन्दोस्तान में लोहा बर्दवान, उड़ीसा और कमाऊँ में निकलता है।

पन्द्रहवाँ पाठ।

भूल।

सुस्ती और भूल का फल बुरा है। भूलनेवाले और सुस्त आदमी का हरएक काम ख़राब होता है। कभी उसको बुद्धि वा ज्ञान नहीं आता और हरएक संगति में उसका निरादर होता है। सुस्ती और भूल से शर्म के सिवा और कुछ नहीं मिलता, जैसा कि इस

THIS EBOOK IS DOWNLOADED FROM
SHAAHISHAYARI.COM

LARGEST COLLECTION OF URDU
SHERS, GHAZALS, NAZMS AND EBOOKS.

कहानी से ज़ाहिर है। एकदिन नदी के किनारे पर एक कछुए और चौगड़े में यह बाज़ी लगी कि देखें उस टीले तक जो यहाँ से कोसभर है कौन पहिले पहुँचता है। उसी समय दोनों बराबर वहाँसे चले और थोड़ी देर में चौगड़ा कछुए से बहुत आगे निकल गया। चौगड़ा यह सोचकर कि मैं बहुत जल्द दौड़ता हूँ और कछुआ अभी बहुत दूर है जब तक वह यहाँ पहुँचेगा मैं ठिकाने पर पहुँच जाऊँगा, राह में सो रहा; परन्तु कछुआ एक पल भर कहीं नहीं ठहरा—धीरे धीरे बराबर चला गया। आख़िर को वह टीले तक पहुँच गया और चौगड़ा सोताही रहा। जब उसकी आँख खुली तो अपनी सुस्ती पर बहुत पछताने लगा और शर्माया।

सोलहवाँ पाठ।

अहमक़ का लतीफ़ा।

एक अहमक़ का ऊँट खो गया। उसने शुक्र किया। लोगों ने पूछा—"भला यह कौन शुक्रकी जगह है?" कहने लगा—"शुक्र इसलिये करता हूँ कि मैं उसपर सवार न था, नहीं तो मैं भी खो जाता।"

सत्रहवाँ पाठ।

देहली के बादशाह शाहजहाँ का बयान।

दिल्ली को शाहजहाँ बादशाह ने यमुना के किनारे पर बसाया। शहरपनाह की दीवार क़रीब ७ मील

के है। मुसल्मान बादशाहों के समय में यह नगर बहुत दिन तक सारे हिन्दोस्तान की राजधानी रहा। मुग़लों के बंश से सिराजुद्दीन अबूज़फ़र यहाँ के पिछले बादशाह थे। उनको लाख रुपये महीना पिन्शन सर्कार अँगरेज़ी से मिलते थे। सिर्फ़ क़िले के अन्दर उनका बन्दोबस्त रहता था, मगर सन् १८५७ ईसवी में बलवे के सबब से वे रंगून भेजे गये और वहीं मरे। अब सारे नगर में सर्कार अँगरेज़ी की हुकूमत है।

अठारहवाँ पाठ।

बदख़त का हाल।

पद्य।

यक लेखक सो कोउ जन, कही बात यह जाय।
एक पत्र लिखि देहु म्वहिं, मम स्वारथ बनि जाय॥
शीत साँस यक खींचि वह, बोला तबहिं तुरन्त।
पाँयन मेरे पीर अति, होत अहहि बुधिमन्त॥
यासों मैं नहिं लिखि सकत, मीत तुम्हारो पत्र।
और कतहुँ तुम जाय अब, ढूँढ़हु अर्थ विचित्र॥
बोला सो जन आपको, वृथा कहौं अनुबन्ध।
कहहु पत्र अरु पाँव सों, कौन होय सम्बन्ध॥
लेखक बोल्यो सुनहु भो, क्रोध दूरि करि देहु।
मैं तुम सों जो कहहुँ अब, त्यहिको चित धरिलेहु॥
कारण यह मैं लिखत अस, पढ़ै न पावत कोय।
काहू कहँ जब कछु लिख्यो, ताकी अस गति होय॥
उसके पढ़ने के लिये, परत आय जब काम।
मोहीं कहँ जाना पड़त, केहू विधि वह ठाम॥

उन्नीसवाँ पाठ।

मोती का बयान।

हिन्दोस्तान में लङ्का के किनारे समुद्र से मोती निकाले जाते हैं। ज्येष्ठ बैशाख में बुड़वे वा मरजिया उनको निकालते हैं। मोती सीप में पैदा होता है। अक्सर मुल्कों के सौदागर उन दिनों में वहाँ मोती ख़रीदने को इकट्ठे होते हैं और दो महीने तक बड़ा मेला रहता है। मकान उस टापू में बाँस के बनते हैं और नारियल के पत्तों से छाये जाते हैं। फ़ारस मुल्क के किनारे आरमुज़ में भी मोती निकलते हैं, लेकिन वहाँ का बादशाह उनकी सौदागरी का कुछ बन्दोबस्त नहीं करता।

बीसवाँ पाठ।

पानी का बयान।

पानी जीने का एक सबब है। ग़ल्ला फल फूल वग़ैरह पानी से पैदा होते हैं। परन्तु जानना चाहिये कि पानी जब ख़राब होता है तो उसमें ज़हर के बराबर गुण हो जाता है। जो उस पानी को पीवे, झट बीमार हो जाय। पानी की ख़राबी का कारण यह है कि जब उसमें घास फूस या पेड़ के पत्ते गिरकर सड़ जाते हैं तो वह पानी ख़राब और मैला हो जाता है। उसका असर जहाँ तक हवा में फैलता है हैज़ा वग़ैरह बीमारी पैदाकरता

है। कुओं में भी यही दोष आ जाता है। इस कारण पानी की ख़बरदारी ज़रूर है। कुओं में कूड़ा या पत्ते वग़ैरह न गिरने पावें और ऊपर भी उनके चारों ओर सफ़ाई रहे। जहाँ कहीं अच्छा पानी न मिले तो पानी को औटाकर पीवे और जो यह भी न बन पड़े तो छान के पीने से भी बहुत फ़ायदा है।

इक्कीसवाँ पाठ।

माता पिता की प्रीति।

किसी समय एक गाँव में आग लगी। सब लोग अपना अपना माल व असबाब लेकर भागे। उस गाँव में दो भाई बड़े मालदार रहते थे। वह भी अपना माल व असबाब बाँधकर भागने के विचार में थे कि आग उनके मकान के पास पहुँच गई। वह असबाब लेके भागने ही चाहते थे कि इसमें उनकी आँख अपने बुड्ढे मा बाप पर पड़ी कि वह मकान के एक कोने में पड़े हैं। यह हाल देखके एक भाई ने दूसरे से कहा कि " माल और असबाब तो हमको फिर मिल जायगा, पर मा बाप फिर न मिलेंगे।" यह कहके उन्होंने असबाब फेंक दिया और एक ने मा को और दूसरे ने बाप को अपने कन्धों पर उठा लिया और उस आग से बाहर ले निकले।

बाईसवाँ पाठ।

अकबर बादशाह का वर्णन।

अकबर हिन्दोस्तान के मुसल्मान बादशाहों में बहुत नेक और मुन्सिफ़ था। बहुधा रात भर वह नहीं सोता और विद्या की चर्चा रखता था। मेह-नती भी ऐसा ही था कि अजमेर से आगरे तक एक सौ दस कोस बराबर दो दिन में घोड़ेपर चला गया। अक्सर क़ानून की किताबें भी उसने बनाईं, उनमें से आईन अकबरी बहुत मशहूर है। राजा विक्रमाजीत की तरह उसके दरबार में भी बड़े बड़े अक़्लमन्द लोग इकट्ठा थे। उनमें से राजा जयसिंह बहादुरी में, बीरबल बहादुरी और दिल्लगी में, फ़ैज़ी और अबुल्फ़ज़्ल इल्म व हिकमत में, मीर खुसरो शाअ़री में बहुत प्रसिद्ध थे।

तेईसवाँ पाठ।

लकड़हारे और मौतकी मुलाक़ात।

एक मज़दूर धूप में लकड़ी का गट्ठा लिये जाता था। चलते चलते बोझ के मारे थक गया और दुःख से घबरा के शिर से गट्ठे को फेंक के कहने लगा कि जो इस जीने से मौत आ जाती तो अच्छा था। उसी क्षण मौत आदमी का रूप बनके सामने आ खड़ी हुई और कहनेलगी–"तूने मुझे क्यों बुलाया है?" मौत को देखते ही मज़दूर घबराया

और जवाब दिया कि मैंने आपको इतने ही के वास्ते बुलाया है कि कृपा करके यह गट्ठा उठा दीजिये।

चौबीसवाँ पाठ।

जामअ मसजिद।

दिल्ली शहर में बड़ी मशहूर इमारत जामअ मसजिद है। यह शाहजहाँ बादशाह के समय में तैयार हुई और दस लाख रुपया उसमें ख़र्च हुये। इसके बीच में संगमरमर का एक हौज़ है और दोनों ओर इस मसजिद के दो मीनार हैं जिनकी उँचाई एक सौ फ़ीट है। तमाम मसजिद की लम्बाई दो सौ सोलह फ़ीट है। भीतर का फ़र्श संगमरमर और संगमूसा का बना है। मीनारों के ऊपर जाने के लिये एक सौ तीस पेंचदार सिड्ढियाँ लाल पत्थर की बनी हैं। सर्कार अँगरेज़ी ने इस मसजिद के ख़र्च के वास्ते एक वसीक़ा बाँध दिया है। यह मसजिद सारे संसार की मसजिदों से सुन्दर समझी जाती है।

पच्चीसवाँ पाठ।

स्वप्न।

पद्य।

सोवत में काहू यह देखा। यक शैतान कियो अतिबेखा॥
अय फिट्टेश बुरे गुणवाला। मुझको क्यों तैं कियो बेहाला॥
क्रोध कियो औ दियो तमाचा। पुनि करसों पकड़े मुसकाँचा॥
औ फिर दियो तमाचा कड़का। तब आँखें खुल गईं बेधड़का॥

जब देखी दाढ़ी निज हाथा। मन मलीन भो लज्जित गाता॥

छब्बीसवाँ पाठ।

कागज़।

जब तक कागज़ नहीं बना था लोग भोजपत्र और ताड़ के पत्तोंपर लिखते थे। पहिले पहिल रुई का कागज़ चीनवाले बनाने लगे। उनसे अरब के लोगों ने सीखा। उसके पीछे अँगरेज़ों ने कागज़ बनाना जाना। वलायत में बहुत अच्छा कागज़ महीन कपड़ों के चीथड़ों से बनाया जाता है और मोटा कागज़ टाट से। इस देश में बहुधा कागज़ रुई वा टाट पानी में गला के बनाते हैं। हिन्दोस्तान के अगले राजाओं के समय में सनदें ताँबे या पीतल के पत्रोंपर खोदी जाती थीं और इँगलिस्तान में आज कल बड़ी बड़ी सनदें ऐसे कागज़ पर लिखते हैं जो चमड़े से बना है। यह कागज़ बहुत मज़बूत होता है, पाँच छःसौ बर्ष तक रहता है।

सत्ताईसवाँ पाठ।

लालच।

किसी लालची की मुर्गी रोज़ एक सोने का अण्डा देती थी। उसने समझा कि ऐसे तो धन बहुत दिनों में इकट्ठा होगा जो इसका पेट फाड़के सब अण्डे एकही बार निकाललूँ तो जल्द अमीर होजाऊँ। इस लालच से उसने मुर्गी का पेट फाड़कर उसको मारडाला परन्तु पछतावेके सिवाय उसके कुछ हाथ न लगा। देखो, लालच

ने उसको ऐसा अन्धा किया कि बहुत सा धन तो किनारे रहा जो रोज़ मिलता था उसको भी उसने खो दिया।

अट्ठाईसवाँ पाठ।

आसफ़ुद्दौलह का हाल।

नव्वाब आसफ़ुद्दौलह शाह देहली के वज़ीर और सूबेदार कहलाते थे। उनसे पहिले अवध का हाकिम फ़ैज़ाबाद में रहता था परन्तु आसफ़ुद्दौलह लखनऊ में रहने लगे और उसे खूब बसाया। एक बहुत अच्छी इमारत जिसे बड़ा इमामबाड़ा कहते हैं वहाँ बनाई। वह मकान रैयत के पालने के लिये उन दिनों में बनाया गया था कि जब बहुत बड़ा अकाल पड़ा था। सिवा उसके एक नहर करबला में उन्होंने बनवाई, उसको नहर आसफ़ी कहते हैं। गुणी लोगों का उन्होंने बड़ा सत्कार किया और बहुत रुपया ख़र्च करके एक कुतुबख़ाना भी इकट्ठा किया। उनके समय में जनरल मारटीन साहब ने भी अच्छे अच्छे मकान लखनऊ में बनवाये।

उन्तीसवाँ पाठ।

मच्छर और मधुमक्खी।

जाड़े के दिनों में एक मच्छर भूख से तंग आके मधुमक्खियों के पास गया और उनसे कहा कि जो तुम थोड़ा शहद हमको दो तो हम तुम्हारे लड़कों को गाना सिखायें। मक्खियों ने कहा कि

बालशिक्षा पहिला हिस्सा का सूचीपत्र ॥

सबक़	विषय	पृष्ठ
१	सफ़ाई	५
२	कहानी	५
३	सिकन्दर का हाल	६
४	उस्ताद का अदब	६
५	सूर्य्य का बयान	७
६	पद्य	७
७	बरगद का पेड़	८
८	औलाद का हक़	८
९	मूर्खता का वर्णन	९
१०	राजा विक्रमाजीत का हाल	९
११	कुबड़े बुड्ढे का बयान	९
१२	ज़मीन का वर्णन	१०
१३	आज़ाद फ़क़ीर	१०
१४	लोहे का बयान	११
१५	भूल	११
१६	अहमक़ का लतीफ़ा....	१२
१७	शाहजहाँ बादशाह देहली का बयान	१२
१८	बदख़त का हाल	१३
१९	मोती का बयान	१४
२०	पानी का बयान	१४
२१	माता पिता की प्रीति	१५
२२	अकबर बादशाह का वर्णन	१६
२३	लकड़हारे और मौत की मुलाक़ात	१६
२४	जामअमसजिद	१७
२५	स्वप्न	१७
२६	कागज़	१८
२७	लालच	१८

आप कृपा कीजिये, हम अपने लड़कों को मेहनत करना सिखावेंगी जिसमें हमारी तरह शहद इकट्ठा करें जो समय पड़ेपर उनके काम आवे। गाना जानने से तुम्हींको क्या लाभ हुआ कि जो हम अपने बालकों को सिखायें। जैसे तुम भीख माँगते हो वैसे ही वे भी मुहताज रहेंगे। आदमी को चाहिये कि अपनी सन्तान को वह चीज़ सिखाये जिससे उसको बहुत फ़ायदा हो। बेकाम की चीज़ सिखाना मानो उनके साथ बैर करना है।

तीसवाँ पाठ।

जुग़राफ़िया अवध।

सूबा अवध नैपाल और गंगा के बीच में है। इस देश में चौबीस हज़ार वर्गात्मक मील धरती है और एक करोड़ चौदह लाख सात हज़ार छः सौ पच्चीस के क़रीब आदमी हैं। ब्राह्मणों की बस्ती इसमें बहुत है। राजपूत उनसे कम हैं। पहिले इस मुल्क का हाकिम फ़ैज़ाबाद में रहता था जिसके पास अयोध्या तीर्थस्थान है, जहाँ राजा रामचन्द्र पैदा हुये थे। अब हाकिम यहाँ का लखनऊ में रहता है। इस देश की प्रसिद्ध नदियाँ ये हैं—घाघरा या सरयू, गोमती, सई, टेढ़ी और कल्याणी आदि। धरती इस सूबे की बराबर है। कोई पहाड़ नहीं है। यह मुल्क बहुत हरा भरा है। यहाँ अनाज सब प्रकार का उपजता है और

और देशों को भेजा जाता है। रुई बहुत नहीं पैदा होती। परन्तु यमुना के नज़दीक के मुल्कों से बहुत आती है।

इकतीसवाँ पाठ।

तीन दुर्बुद्धियों का हाल।

पद्य।

मूरख तीन मनुज यक बारा। चले जात कछु करत बिचारा॥
अति बिचित्र मन्दिर तेहि ठाईं। निरखि एक जड़ कहत ढिठाईं॥
तब के राज रहे अस भारी। जो पृथ्वी से सदन सँवारी॥

दोहा।

कहत दूसरो बचन अस, सुनु निलज्ज यह बात।
यह पहिले रचि धरणि पर, पुनि उठाय यह ज्ञात॥

सवैया।

यह देखि करैं आश्चर्य सबै त्यहि औसर तीसर बात कही।
यह कूप अनूपम मान कही सब लोगन उल्टि दियो जबहीं॥
मीनार भयो तब नाम इसे जड़ आदत ऐसी अहै जो मही।
जड़ आपन पण्डित मानतहीं निज ऐब को ध्यान करै हैं नहीं॥

बत्तीसवाँ पाठ।

ह्वेल मछली।

ह्वेल मछली बहुत बड़ी अर्थात् तीस हाथ लम्बी और इतनी ही चौड़ी होती है। पूँछ उसकी आठ गज़ चौड़ी और मुँह उसका चौदह हाथ लम्बा होता है। उसको समुद्र में रहने से लोग कहने को तो मछली कहते हैं मगर वह मछली की नाईं अण्डे नहीं देती, बल्कि बच्चे जनती है। आदमी उसका शिकार करते

हैं और उसकी चरबी की बत्ती बनाते हैं। इन बत्तियों की रोशनी साफ़ होती है और ये दूर दूर के देशों में काम में लाई जाती हैं। यह मछली बहुधा शीत देशों के पास समुद्र में रहती है और कभी कभी गर्म मुल्कों के नज़दीक भी पाई जाती है।

तेंतीसवाँ पाठ।

नाइत्तिफ़ाक़ी।

फूट संसार में एक ऐसा अपराध है कि इससे बड़े बड़े घर नाश हो जाते हैं, राज्य बिगड़ जाते हैं, वैरी बड़े बलवान् हो जाते हैं। आदमी को चाहिये कि दुश्मन और मतलबी की बात पर न चले और अक़्लमन्द की नसीहत को गाँठ में बाँधे और उसपर चले और जहाँ तक हो सके फूट से बचा रहे। हिन्दोस्तान नाइत्तिफ़ाक़ी के सबब से हमेशा ग़ैर क़ौमों के वश में रहा है।

चौंतीसवाँ पाठ।

कहानी।

एक राजा ने मरते समय अपने लड़कों को बुला के एक मज़बूत रस्सी उनको दी और कहा कि सब मिल के इसे तोड़ो। सभों ने मिलके ज़ोर किया परन्तु वह न टूटी। उसने रस्सी को खोल डाला और एक एक लड़ हरएक लड़के को दी और कहा कि अब तो इसे तोड़ो। सबने सहज में अपनी अपनी लड़ को तोड़

डाला। उस वक़्त बादशाह ने कहा कि देखो इसी तरह जब तक आपस में मिले रहोगे तब तक तुमको कोई न तोड़ सकेगा और जो फूट पड़ जायगी तो ज़रा से झिटके में जैसे यह लड़ टूट गई है वैसे ही टूट जाओगे।

पैंतीसवाँ पाठ।

सआदतअलीख़ाँ।

आसफ़ुद्दौला के कोई औलाद न थी, इसीसे उनके भाई सआदतअलीख़ाँ को अँगरेज़ों ने बनारस से बुलाकर लखनऊ का नव्वाब बनाया। यह बुद्धिमान् थे परन्तु लालची बहुत थे। ख़र्च बेकाम उनके समय में नहीं हुआ और बाईस करोड़ रुपया के लगभग उन्होंने ख़ज़ाने में इकट्ठा किया था। क़ैसरबाग़ के पास लखनऊ में उनकी क़बर बनी है। यह नव्वाब ही कहलाते थे, बादशाह की पदवी उस समय तक न थी।

छत्तीसवाँ पाठ।

माली की हाज़िरजवाबी।

एक आदमी ने माली से पूछा कि "तूने छोटे पेड़ों को रस्सी से क्यों खींचकर बाँधा है?" उसने जवाब दिया कि "बेढँगे न बढ़ जायँ।" सच है, यही दशा आदमियों की है। जो बचपन से सुराह पर न लगाये जायँ और सुचाल के वास्ते अच्छी तरह न दबाये जायँ तो जवानी में अपने मन के होकर बुरे कामों की ओर झुक जाते हैं।

सैंतीसवाँ पाठ।

अवध के ज़िले।

अवध के चार बड़े हिस्से हैं उनमें से हरएक को क़िस्मत व कमिश्नरी कहते हैं। एक एक क़िस्मत व कमिश्नरी में तीन तीन ज़िले हैं। ब्यौरा उनका यह है–

नाम क़िस्मत	नाम ज़िलअ़		
लखनऊ	लखनऊ ख़ास,	उन्नाव,	बारहबंकी
रायबरेली	रायबरेली ख़ास,	प्रतापगढ़,	सुल्ताँपुर
फ़ैज़ाबाद	फ़ैज़ाबाद ख़ास,	गोंड़ा,	बहिरायच
सीतापुर	सीतापुर ख़ास,	हरदोई,	खीरी

यहाँ के सबसे बड़े हाकिम को चीफ़ कमिश्नर कहते हैं, जो सबके हाकिम हैं। उनके नीचे एक मददगार हैं जिनको जुडीशल कमिश्नर कहते हैं। वे दीवानी व फ़ौजदारी के मुक़द्दमे फ़ैसल करते हैं। माल का काम और कुल सूबे का बन्दोबस्त चीफ़ कमिश्नर आप करते हैं। हर एक क़िस्मत में एक एक कमिश्नर रहते हैं जिनके सामने बड़े बड़े मुक़द्दमे पेश होते हैं जैसे ख़ून और डकैती वग़ैरह और उन्हींके सिपुर्द उस देश की आमदनी की जाँच है। उनके नीचे हरएक ज़िले में एक एक डिपुटीकमिश्नर हैं और उनके मददगार असिस्टण्ट कमिश्नर, एक्स्ट्राअसिस्टण्ट कमिश्नर और तहसीलदार आदि हैं।

मुदर्रिसों को चाहिये जिन जिन जगहों के नाम इस पाठ या दूसरे पाठ में लिखे हैं उन्हें लड़कों को नक़्शों में अच्छी तरह दिखलावें और समझावें।

अड़तीसवाँ पाठ।

सूबा अवध के शहर और क़सबे।

अवध के सूबा में दो ही बड़े शहर हैं—एक लखनऊ, दूसरा फ़ैज़ाबाद। लखनऊ गोमती नदी पर बसा है और सबसे बड़ा शहर है। इसमें २५८००० आदमी बसते हैं। नव्वाब आसफ़ुद्दौला बहादुर के समय से पहिले यह शहर एक छोटा सा क़सबा था, परन्तु नव्वाब साहब ने जबसे इसको राजधानी बनाया तबसे इस क़सबे की बहुत बढ़ती हुई। इसमें अच्छी अच्छी इमारतें हैं। फ़ैज़ाबाद घाघरा और सरयू नदी पर बसता है। यह शहर अगले वक़्त में अवध की राजधानी था। मन्सूरअलीखाँ बहादुर की अमल्दारी से पहिले राजधानी अयोध्या के नाम से मशहूर थी, लेकिन नव्वाब साहब ने पुरानी अयोध्या के पश्चिम ओर थोड़ी दूर पर यह शहर बसाया और इसका नाम ईरान देश की अपनी जन्मभूमि के नाम से फ़ैज़ाबाद रक्खा। अब फ़ैज़ाबाद और अयोध्या एक शहर के दो किनारे हैं जिसमें १९०००+३८००० आदमी बसते हैं।

सूबा अवध के दूसरे बड़े बड़े क़सबे ये हैं—

ज़िले लखनऊ में—काकोरी, मलिहाबाद ये दोनों क़सबे लखनऊ से पश्चिम और उत्तर हैं।

ज़िले बारहबंकी में-बारहबंकी, दरियाबाद, रुदौली।

ज़िले उन्नाव में—उन्नाव, सफ़ीपुर, पुरवा।

ज़िले सीतापुर में—सीतापुर, ख़ैराबाद, मिश्रिष। मिश्रिष हिन्दुओं के तीर्थयात्रा का स्थान है।

ज़िले हरदोई में—हरदोई, शाहाबाद, बिलग्राम। बिलग्राम बहुत दिनों से विद्या के वास्ते प्रसिद्ध है। इस क़सबे के नामी विद्वान् ये थे-मौलाना अबदुल्जलील ग़ुलामअली आज़ाद, मौलाना ओहदुद्दीन अदीब। सिवा इनके इस ज़िले में दो और शहर हैं—एक सन्दीला, दूसरा पिहानी जहाँ की तलवार मशहूर है।

ज़िले खीरी में—खीरी, मुहम्दी।

ज़िले फ़ैज़ाबाद में—फ़ैज़ाबाद व टाँडा जो घाघरा नदी पर बसता है और कपड़ों के वास्ते मशहूर है। अकबरपुर में एक क़िलअ और एक पुल टौंस नदी पर मौजूद है जो बादशाह अकबर के हुक्म से बनाया गया था। जलालपुर टौंस नदी पर आबाद है।

ज़िले गोंडा में—गोंडा टेढ़ी नदी के पास है, बलरामपुर रावती नदी पर, करनैलगंज सरयू नदी के पास, नव्वाबगंज घाघरा नदी पर बसा है।

बलरामपुर और करनैलगंज और नव्वाबगंज में नाज का व्योपार बहुत होता है।

ज़िले बहिरायच में-बहिरायच सरयू नदीके नज़दीकहै। इस क़सबे में सैयदसालार मसऊद ग़ाज़ी की क़बर है। यहाँ हरसाल एक बहुत बड़ा मेला होताहै।

नानपारा उत्तर की तरफ़ है और यहाँ के रहनेवालों को नैपाल की सौदागरी से बहुत लाभ होता है।

ख़ास क़सबे बहिरायच में १९००० आबादी है।

ज़िले रायबरेली—रायबरेली और सलोन दोनों सई नदी पर बसते हैं और जायस रायबरेली से पूर्व तरफ़ है।

ज़िले प्रतापगढ़—प्रतापगढ़ सई नदी पर और मानिकपुर और गोनी गङ्गा पर बसा है।

ज़िले सुल्ताँपुर और अमोली यह दोनों क़सबे गोमती नदी पर बसे हैं।

उन्तालीसवाँ पाठ।

चीन की दीवार।

चीन के लोगों ने अपने दुश्मनों से बचने के लिये एक दीवार ऐसी बनाई है कि जिससे उनकी अक़्लमन्दी ज़ाहिर होती है। वह दीवार दश हाथ ऊँची और सात सौ मील लम्बी है और बाज़ जगह इतनी चौड़ी है कि छःसवार उसपर बराबर चले जायँ। बहुतेरे ऐसे ऐसे दरिया और पहाड़ बीच में आ पड़े हैं कि जिनमें ऐसी इमारत का बनाना कठिन है और बड़े तअ़ज्जुब की बात यह है कि पाँच ही वर्ष में यह दीवार तय्यार हुई। इस मुल्क में बैरियों से बचाव के वास्ते दीवार बनी तो भी उससे कुछ फ़ायदा न हुआ और तातारवालों ने आकर कहीं कहीं अपना दख़ल कर ही लिया। इससे

अच्छी तरह जान पड़ता है कि मुल्क का बचाव कुछ दीवार व क़िलअ से नहीं होता बल्कि मुल्क का बचाव ईमान्दारी व बहादुरी और विद्या जानने से होता है।

चालीसवाँ पाठ।

सब्र।

संसार में जब कोई दुःख पड़े तो आदमी को सन्तोष करना उचित है और यह ध्यान करना चाहिये कि जब थोड़े दिन में उसको दुःख सहने की आदत हो जायगी तब इतना दुःख जान नहीं पड़ेगा। कभी ऐसा भी होता है कि आदमी थोड़े कष्ट से घबरा के उसे दूर करना चाहता है परन्तु उससे भी बड़ी बड़ी विपत्ति में पड़ता है। मुसीबत दूर करने की तदबीर तो ज़रूर करनी चाहिये पर ऐसी जल्दी न करे कि विपत्ति और अधिक हो जाय। हर एक काम अच्छी तरह सोच विचार के करना चाहिये।

इकतालीसवाँ पाठ।

कहानी।

एक अमीर अपने आदमी को रोज़ तड़के मुर्गे की आवाज़ पर काम के लिये उठाया करता था। आदमी को उस समय नींद के सबब से उठना बुरा मालूम होता था। वह उस तकलीफ़ के दूर करने की फ़िक्र में रहा करता था। एक दिन एक आदमी ने उसको यह सलाह दी कि तू इस मुर्गे को मार डाल, न वह रहेगा

ओर न उसकी आवाज़ से सुबह का अन्दाज़ मि-लेगा। उसने उस निर्बुद्धि की सलाहसे वैसा ही किया। दूसरी रात को उसके मालिक की आधी रात से आँख खुल गई। मुर्ग़ा न था जो रात का अंदाज़ मिलता, वह समझा कि तड़का हो गया, नौकर को उसी वक़्त नींद से उठाके काम पर भेजा। राह में वह आदमी अपनी बेवक़ूफ़ी से बहुत पछताया।

पद्य कुण्डलिया।

ईर्षा करनेहार की क्यों मैं सुनी कुबात।
पछितावे जिय में बहुत बुद्धि न दीन्हों साथ॥
बुद्धि न दीन्हों साथ मुझे शीघ्रता लजायो।
भले बुरे को ज्ञान प्रथम चित में नहिं आयो॥
दुःख रोष बेदिली काम हर समय नशावत।
इनसे रहै सचेत अन्त में सो सुख पावत॥

बयालीसवाँ पाठ।

वायु का वर्णन।

वायु से सब जानदारों की ज़िन्दगी है। पवन के बिना कोई जीव एक क्षण भी नहीं जी सकता, परन्तु साफ़ और ताज़ी ही हवा से तन्दुरुस्ती और ज़िन्दगी बनीरहती है। ख़राब हवासे बीमारी ही नहीं मौत भी हो जाती है। अब जानना चाहिये कि हवा कैसे बिगड़ जाती है। वायु के बिगड़ने के तीन कारण हैं। प्रथम यह कि बार बार श्वास लेने से और यह बात

सबक़	विषय	पृष्ठ
२८	आसफ़ुद्दौलह का हाल	१६
२६	मच्छर और मधुमक्खी	१६
३०	जुग़राफ़ियः अवध	२०
३१	तीन दुर्बुद्धियों का हाल	२१
३२	ह्वैल मछली	२१
३३	नाइत्तिफ़ाक़ी	२२
३४	कहानी	२२
३५	सआदत अलीख़ाँ	२३
३६	माली की हाज़िरजवाबी	२३
३७	अवध के ज़िले	२४
३८	मुल्क अवध के शहर और क़सबे	२५
३६	चीन की दीवार	२७
४०	सब्र	२८
४१	कहानी	२८
४२	वायु का वर्णन	२६
४३	ग़ाज़िउद्दीनहैदर	३१
४४	मौनता अर्थात् चुप रहने का फल	३१
४५	मुहम्मदअलीशाह	३२
४६	हाथी की बुद्धिमानी	३३
४७	ईमानदारी	३३
४८	हिन्दुओं का पुराना हाल	३४
४६	भेड़िया और कुत्ता	३५
५०	फ़रेब	३६
५१	विद्या का गुण	३७
५२	मूर्खता का फल	३६
५३	समय की प्रशंसा	३६

अच्छी तरह ऐसे जानी जाती है कि यदि कोई जीव शीशे के बरतन में बन्द कर दिया जाय तो उस बरतन में की वायु उस जीव के बार बार श्वास लेने से ऐसी बिगड़ जायगी कि वह मर जायगा। इससे ऐसी जगह में रहने से जहाँ पवन आती जाती न न हो या आदमियों की भीड़ हो वैसाही बिगाड़ होगा जैसा ऊपर की मिसाल में कहा गया।

दूसरे यह कि जहाँ कूड़ा या मैलापन होता है वहाँ की हवा भी बिगड़कर बीमारी पैदा करती है और वही हवा बदन के सूराख़ों की राह अन्दर जाकर ज़हर हो जाती है। ऐसी ही बिगड़ी हुई हवा हैज़ा आदि बीमारियों की जड़ है।

तीसरे यह कि जहाँ पेड़ों की पत्तियाँ वा घास पानी में सड़ती है वा खुद पानी ही धूप की गरमी से सड़ जाता है वा मैला पानी बहता है वहाँ की हवा भी बिगड़ जाती है। यह इस तरह जाना जाता है कि तराई और तरी की जगह में जानदार अक्सर बीमार रहते हैं। इससे हमको चाहिये कि ख़राब हवा से बचते रहें, कूड़ा वग़ैरा इकट्ठा न होने दें, मकानों को कीचड़ पानी और पके हुये अनाज के धोवन से साफ़ रक्खें, मुहरियों में मैला पानी भरने न पावे। जहाँ तक हो सके मकान में हवा के आने जाने का ख़याल रक्खें।

तेंतालीसवाँ पाठ।

ग़ाज़िउद्दीन हैदर।

सआदतअलीख़ाँ के पीछे उनके बड़े बेटे ग़ाज़िउद्दीन हैदर अवध के मालिक हुये। अँगरेज़ों की तरफ़ से उनको बादशाहत का ख़िताब मिला और उनके नाम का सिक्का जारी होकर ताज व तख़्त बादशाही उनके लिये तैयार हुआ। यह बादशाह बहुत शराबी और अपने मुल्क से बेख़बर थे। मशहूर है कि यह कुछ झक्की भी थे। तेरह वर्ष राज्य करके सन् १८२७ईसवी में उनका देहान्त हुआ और उनके पीछे सूबा अवध में जो हाकिम हुआ वह बादशाह कहलाया। ग़ाज़िउद्दीन हैदर के बाद नसीरुद्दीन हैदर उनके बेटे ने सन् १८३७ ई० तक राज्य किया।

चवालीसवाँ पाठ।

मौनता अर्थात् चुप रहने का फल।

एक गधे ने कहीं शेरकी खाल पाई। वह उसको ओढ़ के जङ्गल में फिरने लगा। आदमी व जानवर दूर से उसे देख के डर के मारे उसके पास नहीं आते थे और गधा तमाम जङ्गल और खेत चरता फिरता था। एक दिन यह सोचा कि शायद मेरे न बोलने से जानवर यह समझें कि यह शेर नहीं है और उनके जी से डर जाता रहे, इसलिये शेर की बोली बोलनी चाही। ज्योंही वह शेरकी बोली बना कर बोला, सब

जानवर पहिंचान गये कि यह गधा है और उसके ऊपर आ गिरे और गुस्से के मारे उसे टुकड़े टुकड़े कर डाला।

पद्य–सवैया।

चित्त विचारिकै मौन गहै अरु सोई प्रतिष्ठित है जगमाहीं।
लोभ वृथा मोहादि अनेक सबै दुरि जात लखै कोउ नाहीं॥
कैसो छिपावतहै इनको जिमि क्रोध को देखिकै धर्म पराहीं।
और कहाँलों बखान करौं गुण ऐसे अनेक गिने नहिं जाहीं॥

पैंतालीसवाँ पाठ।

मुहम्मदअलीशाह।

नसीरुद्दीन हैदर के मरने पर मुहम्मदअली शाह उनके चचा गद्दीपर बैठे और वे पाँच वर्ष राज्य करके सन् १८४२ ई० में मर गये उसके बाद अमजदअली शाह उनकी गद्दी पर बैठे। उन्होंने भी पाँच वर्ष राज्य किया सन् १८४७ई० में वाजिदअलीशाह अमजदअलीशाह के बेटे तख़्तपर बैठे। परन्तु उन्होंने राज्य काजमें कुछ ध्यान न दिया, भोगविलासमें पड़ गये। अन्तमें इस बे बन्दोबस्ती और ख़राबी के सबबसे सन् १८५६ ई० में मुल्क उनके हाथ से निकल गया और वह कलकत्ते को चलेगये। वहाँ से वह लाख रुपया महीना पेन्शन पातेरहे और सन् १८८७ ई० में उनका वैकुण्ठवास होगया। सन् १८५६ई०से अँगरेज़ लोग इस मुल्कमें राज्य करते हैं।

THIS EBOOK IS DOWNLOADED FROM
SHAAHISHAYARI.COM

LARGEST COLLECTION OF URDU
SHERS, GHAZALS, NAZMS AND EBOOKS.

छियालीसवाँ पाठ।

हाथी की बुद्धिमानी।

हाथी बड़ा बुद्धिमान् होता है और बहुधा विचित्र काम करता है। नीचे लिखी हुई कहानी से उस की अक़्लमन्दी ज़ाहिर होती है। सूरत नगर में एक हाथी सड़क पर चला जाता था। जब एक दरज़ी की दूकान के पास पहुँचा तो उसने अपनी सूँड़ दूकान के अन्दर बढ़ाई। उस समय वहाँ बहुत से दरज़ी बैठे कपड़े सीते थे। किसीने एक सुई उसकी सूँड़ में चुभो दी। हाथी उस वक़्त तो चुपका चला गया। पर जब वहाँ से फिरा तो कहीं से मैलापानी अपनी सूँड़ में भर लाया और उस दरज़ी की दूकानपर पहुँच के वह मैला पानी इस तरह से छिड़क दिया कि जो कपड़े वे लोग सी रहे थे सब ख़राब हो गये और वे दरज़ी बहुत पछिताये और लजाये।

सैंतालीसवाँ पाठ।

ईमान्दारी।

एक ईमान्दार ग़रीब का लड़का किसी अमीर के पास नौकर था। एक दिन उस अमीर ने उसको दो जोड़े कपड़े इनआम दिये। वह ख़ुश होकर अपने घर लाया। एक तो उसने पहिन लिया और दूसरा उठा रक्खा। जब उसने दूसरा जोड़ा बदला तो अँगरखे की जेब में एक नोट ५०) रुपये का निकला।

वह उसको लेकर अमीर के पास गया और कहा कि यह नोट उस अँगरखे की जेब में भूल से रह गया था, जो हुज़ूर ने मुझको बख़्शा दिया था। अमीर उसकी ईमान्दारी पर बहुत राज़ी हुआ और उस वक़्त तो उसको रुख़्सत किया, पर दूसरे दिन जब वह लड़का अपने वक़्त पर फिर हाज़िर हुआ तब अमीर ने अपने साथियों के सामने उसकी ईमान्दारी का सब हाल कहा और एक अँगरखा उसे और दिया और कहा कि इसकी जेब में सौ रुपये का नोट तू पावेगा। उसे तू अपने ख़र्चमें लाना। देखो, ईमान्दारी का फल यह है कि पचास रुपये के बदले उसने सौ रुपये पाये और सबके आगे उसकी बड़ाई हुई।

अड़तालीसवाँ पाठ।

हिन्दुओं का पुराना हाल।

हिन्दू अस्ल रहनेवाले हिन्दोस्तान के नहीं हैं। यह लोग ईरान की ओर से आके पंजाब देश में और गङ्गा यमुना और घाघरा आदि नदियों के किनारों पर बसे। तिस पीछे बड़े बड़े नगर जैसे दिल्ली, क़न्नौज और अयोध्या उन नदियों पर बसाये। बहुत दिनों तक यह लोग उत्तरीय हिन्दोस्तान में रहे। जब उन कीबढ़ती हुई तो बिन्ध्याचल पहाड़ और नर्मदा नदी के पार होकर दखन में पहुँचे और उधरके देशों में भी फैले। अस्ल बोली उनकी संस्कृत थी। धीरे धीरे

उस भाषासे हिन्दी, मरहटी, बंगाली आदि भाषायें निकलीं जो आजकल सारे हिन्दोस्तान में बोली जाती हैं। परन्तु दखन के बहुतेरे पहाड़ी देशों की भाषा जैसे तामिल और तैलंग संस्कृत से सब तरह अलग हैं।

उन्नीसवाँ पाठ।

भेड़िया और कुत्ता।

एक भूखा भेड़िया किसी गाँव के पास आया। संयोग से एक मोटा ताज़ा कुत्ता उसे देख पड़ा। भेड़िये को उसकी मुटाई पर तअज्जुब हुआ और कुत्ते से पूछने लगा—"क्यों भाई कुत्ते, तुम क्या उपाय करते हो जो ऐसे मोटे बने हो?" कुत्ते ने जवाब दिया कि "मैं अपने मालिक की ताबेदारी करता हूँ और उस का माल चोरों से बचाता हूँ। उसके पलटेमें मालिक की मेहरबानी से तरह तरह के खाने खाता हूँ।" भेड़िये ने कहा—"ऐ भाई! जो हो सके तो मैं भी तुम्हारे साथ तुम्हारे मालिक के यहाँ चलूँ और चैन से रहूँ।" कुत्ता उसे अपने साथ ले चला। इत्तिफ़ाक़ से भेड़िये ने देखा कि उसकी गर्दन के चारों ओर एक लकीर बनी है और वहाँ के बाल सब उड़ गये हैं। भेड़िये ने पूछा—"भाई, गर्दन पर क्या है?" उसने कहा—"कुछ तो नहीं, पट्टे का दाग़ है।" यह सुनते ही भेड़िया पिछले पैरों फिरा और बोला—"आप जाइये, मुझको क़ैद होके मोटा होना मंज़ूर नहीं।"

पचासवाँ पाठ।

फ़रेब।

एक नगर से दो आदमी जिनका नाम ग़ाफ़िल और आक़िल था, परदेश को निकले। राह में उनको एक तोड़ा रुपयों का मिल गया। वह दोनों ख़ुश होके घर फिरे कि थोड़े दिन तक आराम करें, तब फिर परदेश करेंगे। एक ने कहा कि "यह सब रुपया एकबारगी ले जाना अच्छा नहीं है, ऐसा न हो कि पकड़े जावें।" इस वास्ते थोड़ा रुपया निकालके बाक़ी एक पेड़ के नीचे गाड़ दिया। मगर आक़िल छिपकर वह रुपया खोद लाया और ज़मीन को बराबर कर आया। जब ग़ाफ़िल के पास ख़र्च न रहा तो आक़िल से बोला—"चलो और रुपया निकाल लावें।" जब दोनों ने वहाँ पहुँचकर ज़मीन खोदी तो रुपया न पाया। आक़िल ने उलटी चोरी ग़ाफ़िल को लगाई कि तूही रुपया ले गया है। आख़िर को दोनों क़ाज़ी के पास गये क़ाज़ी ने आक़िल से गवाह माँगा। उसने जवाब दिया कि "जिस पेड़ के नीचे रुपया गाड़ा था वही मेरा गवाह है। जो आप वहाँ चलिये तो वह साफ़ हाल कहेगा।" दूसरे रोज़ क़ाज़ी वहाँ गया और बहुत से लोग इस अजूबा तमाशे के देखने को इकट्ठा हुये। क़ाज़ी के पूछने पर उस पेड़ से आवाज़ आई कि "ग़ाफ़िल ने रुपया लिया है।" क़ाज़ी यह सुनके हैरान हुआ और समझा

कि दरख़्त में कुछ भेद है। हुक्म दिया—"इसके चारों ओर लकड़ी इकट्ठा करके आग लगा दो।" जब ऐसा हुआ, एक आदमी घबराके उस पेड़ के खोलसे बाहर निकलआया। क़ाज़ी ने पूछा—"तू कौन है?" उसने कहा—"मुझे आक़िल ने दरख़्त में बिठलाकर सिखला दिया था कि जो कोई पूछे कि रुपया किसने लिया है, तो ग़ाफ़िल का नाम कह देना।" इस बात पर क़ाज़ी ने आक़िल से रुपया लेकर ग़ाफ़िल को दिलवादिया और उसको इस फ़रेब करने की बड़ी सज़ा दी।

इक्यावनवाँ पाठ।

विद्या का गुण।

एक महाजनके दो लड़के थे। बड़े लड़केको उसने केवल अपने घर का हिसाब किताब सिखाया और छोटे को मदरसे में भेजकर सब प्रकार की विद्या पढ़वाई। जब वह महाजन मर गया तो उसका सब माल उन दोनों लड़कों ने आधा आधा बाँट लिया तो भी मुफ़्त खानेवालों ने अपने मतलब के वास्ते उनमें ऐसी फूट डालदी कि अदालत में नालिश की। जो लड़का सिर्फ़ हिसाब ही जानता था और अदालत के काम को नहीं जानता था, उसको मुख़्तार नौकर रखना पड़ा और बहुत से मुफ़्त खानेवाले भी उसके यहाँ घुसे और उन लोगों ने धोखा देकर उसका

रुपया बहुत ख़र्च कराया और आप भी ख़ूब उड़ाया। परन्तु जो लड़का आप पढ़ा था और क़ानून भी जानता था और कचेहरी में आप बातचीत कर सकता था उसने आप रूबकारी की और सब काग़ज़ात आपही अदालत में पेश किये। थोड़े दिन में बड़े भाई को दुष्ट नौकरोंने लूटकर कंगाल करदिया और छोटे भाई ने मुक़द्दमा भी जीता और ख़र्च करने पर भी उसके पास बहुत रुपया बच रहा। जिससे उसने फिर रोज़गार करके अपना कारख़ाना वैसाही जमा लिया। इस कहानी से अच्छी तरह जाना जाता है कि धनवान् लोगों को विद्या की बहुत ज़ियादह ज़रूरत पड़ती है और रुपया होने से बहुत झूठे मित्र और सलाहकार बन जाते हैं जो सिर्फ़ अपने मतलब के चाहनेवाले होते हैं। उनकी बातों पर विश्वास न करना चाहिये।

पद्य–कुण्डलिया।

तुलसी या संसार में मतलब को व्यवहार।
जब लग पैसा गाँठ है तब लग यार हज़ार॥
तब लग यार हज़ार यार संगहि मिलि डोलैं।
जब पैसा नहिं गाँठ यार मुखहू नहिं बोलैं॥
कहैं गिरिधर कविराय जगत का याही लेखा।
बिन मतलब बिन ग़रज़ यार कोइ बिरला देखा॥

बालशिक्षा

पहिला हिस्सा।

पहिला पाठ।

सफ़ाई।

हरएक लड़के को चाहिये कि सुबह उठके हाथ मुँह धोया करे और साफ़ कपड़े चाहे वे मोटे हों या महीन, पहिन कर पढ़ने को जाया करे। सफ़ाई से रहना बहुत अच्छी बात है, जिस आदमी के जी में सफ़ाई होती है उसका सब आदर करते हैं और बीमारियों से भी वह बचता है। जब कोई लड़का साफ़ कपड़े पहिन कर गुरु के पास जाता है तो वह उसे अपने पास अच्छी जगह बिठाता है और दिल लगाके उसे पढ़ाता है; किन्तु जो लड़के मैले रहते हैं उनको कोई अपने पास नहीं बैठने देता और हर जगह उनका अनादर होता है।

दूसरा पाठ।

कहानी।

एक ग़रीब का लड़का हाथ मुँह धोकर और बहुत साफ़ कपड़े पहिन कर मदरसे में रोज़ जाया करता था। मुदर्रिस उसको ऐसा साफ़ देखकर उस पर बहुत मेहरबानी करता था और अच्छीतरह

बावनवाँ पाठ।

मूर्खता का फल।

एक अमीरके एकही लड़का था। वह उसे बहुत प्यार करता था। प्रेम के सबब से कभी उस अमीर ने लड़के को लिखने पढ़ने की ताकीद न की। वह यह विचार करता था कि मेरा धन उसकी तमाम उमर को बहुत होगा। यह पढ़के क्या करेगा। जब वह अमीर मरा, लड़के ने मुफ़्त का धन पाया और थोड़े ही दिनों में उड़ा दिया। अन्त को महाजनों से उधार लेके ख़र्च करने लगा। पर जब वह ऋण दे न सका तो महाजनों ने नालिश करके उसे क़ैद कराया। बहुत दिन पीछे क़ैद से छूटा और थोड़े दिनों तक भीख माँगता रहा। संयोगसे उसी नगर में काल पड़ा। उस वक़्त उसको भीख भी न मिली। अन्त को भूख के मारे मर गया।

तिरेपनवाँ पाठ।

समय की प्रशंसा।

कवित्व।

पल एकहु जो ठहरात नहीं गति चित्त तरंगहु ते सरसाई।
पुखराज औ पन्नाकी कौन कहै मणिमाणिकहू न बराबरि पाई॥
जो हरि मोल के हार गये नर दूसर कौन जो क़ीमत गाई।
गुणसागर सोई पदारथ है संसार के काज को जो सुखदाई॥

दोहा।

गुप्त होत है पलक में, कोउ न पावत ताहि।

गुज़र गया जो वक़्त है, सो फिरि आवत नाहिं॥
कुटिल कुमारग चलतहै, पर अकाज सों नेह।
विद्यावान भये जगत, पूरब को फल येह॥
बालक अरु बेहोश जे, अरु तरुणता समेत।
इनहिं दुरावन के लिये, बरणत सुनहु सचेत॥

कवित्व।

जब बुद्धि औ ज्ञान हृदय में बसै तबहीं निज धर्म्म औ कर्म्म विचारो। मद क्रोध औ लोभ मोहादिक जे सब त्यागिकै निज परलोक सम्हारो॥ अनवश्य को वश्य तो होत नहीं जस वायु बहै तस पीठिहि फेरो। कबहूँ नहिं चित्त में खेद करौ न कभी उसको अपमान के गेरो॥

चौपाई।

जो नरसों इसमें बनि आवै। उद्यम करि निज प्राण जियावै॥
मित्रनसे लै जीव अधारा। छाँड़ि पदारथ देइ बिकारा॥
विद्यापढ़िकै सिद्धिहि सिद्धै। पूरण वय आनन्द में सद्धै॥

दोहा।

समय न जावै हाथ सों, सोई करहु उपाउ।
करहि खूब दिल जान से, होय जगत में नाँउ॥
खान पान में भूलि कै, समय न खोवै आप।
श्रम करिकै विद्या पढ़ै, जासों बढ़ै प्रताप॥

इति।

दो०-शशि वसु बसु शशि ईसवी, तीस जून गुरुवार॥
शिशुशिक्षा पूरी भई, बुधजन चित हितकार॥ १॥

पढ़ाता और अपने पास बिठाता था, इसलिये उस लड़के ने थोड़े ही दिनों में अच्छी तरह लिखना पढ़ना सीख लिया। फिर उसके उस्ताद ने खुश होकर उसको अपना नायब मुक़र्रर किया। देखो, सफ़ाई और मेहनत का क्या जल्दी उसने फल पाया।

तीसरा पाठ।

सिकन्दर का हाल।

सिकन्दर बादशाह, जिसका नाम तमाम दुनिया में प्रसिद्ध है, बड़ा बुद्धिमान् और बहादुर था। उसने फ़ारस का मुल्क जीतकर हिन्दोस्तान पर चढ़ाई की और पंजाबमें कई लड़ाइयाँ हिन्दू राजाओं से जीतीं। जब उसने सतलज नदी पार करके आगे बढ़ना चाहा तो उसकी फ़ौज राज़ी न हुई और उसका हुक्म न माना, तब लाचार होकर वह अपने मुल्क को लौट गया। वह भी पण्डितों का सन्मान करता था और सब से ज़ियादह अपने उस्ताद अरस्तू को मानता था।

चौथा पाठ।

उस्ताद का अदब।

कहावत है कि एक दिन किसी ने सिकन्दर से पूछा कि आप अपने बाप को ज़ियादह मानते हैं या गुरु को। उसने जवाब दिया कि गुरु का दर्जा ज़ियादह जानता हूँ क्योंकि बाप ने तो सिर्फ़ मुझे पाला ही है, पर उस्ताद से तमाम इल्म व अदब पाया जिससे

इस दर्जे को पहुँचा। लड़कों को चाहिये कि मा और बाप की हमेशा इज़्ज़त करें और जिस आदमी से विद्या और ज़िन्दगी दोनों चीज़ें मिलें उसकी और भी इज़्ज़त करें।

पाँचवाँ पाठ।

सूर्य का बयान।

सूर्य ज़मीन से बहुत दूर और बहुत बड़ा है। उससे हमको गर्मी और रोशनी पहुँचती है। जिस जगह जितनी सीधी किरणें उसकी पड़ती हैं उतनी ही गर्मी वहाँ अधिक होती है। देखो सुबह को जब कि आफ़ताब की किरणें तिरछी होती हैं तब उतनी गर्मी नहीं होती जितनी दोपहर को जब कि सूर्य शिर पर होता है और उसकी किरणें सीधी ज़मीन पर पड़ती हैं। जिस तरह सूर्य से ज़मीन रोशन और गर्म होती है उसी तरह उससे चाँद को भी रोशनी और गर्मी पहुँचती है।

छठा पाठ।

पद्य।

निद्रित जीवन सों कहत, रवि यह प्रातःकाल।
अब उठि करहु प्रयत्न सब, निज निज कर्म सुचाल॥
अतिश्रम करि काटहु दिवस, प्राप्त होय जेहिं वित्त।
निशि को ऐहै बहुरि वह, समय शयन सुखचित्त॥

सातवाँ पाठ।

बरगद का पेड़।

बरगद का बृक्ष हिन्दोस्तान में बड़ा अजूबा है इस दरख़्त की डालों से जटा ज़मीन की तरफ़ लटकती हैं और जब ज़मीनपर पहुँच जाती हैं तो जम कर जड़ें हो जाती हैं। गुजरात के देश में नर्मदा नदी पर एक बहुत बड़ा पेड़ बरगद का है वह कबीरदास के नाम से मशहूर है। इसलिये उसे कबीरबड़ कहते हैं। उसके दर्शन का एक मेला होता है। हज़ारों हिन्दू यात्री वहाँ इकट्ठे होते हैं। वह पेड़ इतना बड़ा है कि सात हज़ार आदमी उसकी छाया में रह सकते हैं।

आठवाँ पाठ।

औलाद का हक़।

बाप मा को वाजिब है कि अपने लड़कों को लड़कपन से अच्छी तालीम दें और अदब सिखायें कि जवानी में वे ख़राब न हों। एक आदमी अपने बुड्ढे बाप को मारता था, लोगों ने उसे बुराभला कहा और बोले कि तू बड़ा मूर्ख और नालायक़ है जो बाप के अदब का हक़ नहीं अदा कर सकता। उसने जवाब दिया कि उसने मेरा हक़ अदब सिखाने का कब अदा किया था जो मैं उसका हक़ अदा करूँ। सच है, लड़कों पर मा बाप की क़दर करना सब तरह उचित ही है वे चाहे पण्डित हों चाहे मूर्ख, पर बग़ैर सिख-

लाये ऐसी बात लड़कों की समझ में आना कठिन है।

नवाँ पाठ।

मूर्खता का वर्णन।

पद्य।

मूरख की है दुर्दशा, पृथ्वीतल में जान।
इन कहँ जग में होत नहिं, सुधन प्रतिष्ठा मान॥
यह विचारिकै कहैं बुध, सुनहु सकल दै कान।
जो नर विद्या नहिं पढ़ैं, करैं बुरे नित काम॥
हे चित! जो तू बुद्धिवर, सावधान जो होय।
तौ मूरख संगति तजो, भलो कहै सब कोय॥

दशवाँ पाठ।

राजा बिक्रमाजीत का हाल।

राजा बिक्रमाजीत, जिनको बीर विक्रमादित्य भी कहते हैं, उज्जैन में पँवारबंश में पैदा हुये थे। संवत् इसी राजा के समय से शुरूअ हुआ है। विद्या की उसने बड़ी क़दर की चौदह बड़े नामी पण्डित उसकी सभा में थे उनमें सबसे ज़ियादह मशहूर कालिदास कवि था जिसकी शकुन्तलानाटक, मेघदूत और रघुवंश आदि किताबें आज तक प्रसिद्ध हैं। इन किताबों का बहुत देशों की भाषाओं में तर्जुमा हुआ है।

ग्यारहवाँ पाठ।

कुबड़े बुड्ढे का बयान।

एक कमज़ोर राह में चला जाता था। बुढ़ापे से

कमर उसकी झुकी हुई थी। एक जवान ने हँसी से पूछा–" मियाँ झुके हुये क्या ढूँढ़ते हो " कहा–"बाबा जवानी खो गई है उसे ढूँढ़ता हूँ " सच है, जो वक़्त गुज़र गया फिर हाथ नहीं आता और इसी तरह भूल में उमर गुज़र जाती है और पछ-तावा बाक़ी रह जाता है। आदमी को दुनिया की ज़िन्दगी पर भरोसा न करना चाहिये और वह काम करना चाहिये जिससे नेक नामी बाक़ी रह जाय।

बारहवाँ पाठ।

ज़मीन का वर्णन।

यह ज़मीन देखने में चपटी दिखाई देती है पर अस्ल में बेल की तरह गोल है। इसके बीचोबीच में पूर्व और पश्चिम जितने देश हैं उनमें हमेशा सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं, इससे वहाँ बहुत गर्मी रहा करती है और उन देशों से उत्तर दक्षिण की तरफ़ जितने मुल्क जितने ही दूर हैं उतनी ही वहाँ कम गर्मी होती है, यहाँ तक कि जो मुल्क उत्तर और दक्षिण बहुत दूरी पर हैं वहाँ कभी गर्मी नहीं होती है और इतनी सरदी रहती है कि उसी मुल्क के लोग उसे सह सकते हैं।

तेरहवाँ पाठ।

आज़ाद फ़क़ीर।

एक फ़क़ीर ने किसी आदमी से सवाल किया कि